अध्याय–चतुर्थ
सूफी संगीत के प्रचार हेतु माध्यम

संगीत कला के आरम्भ होने से लेकर वर्तमान तक प्रवाहित होने में समय के अनुरूप विभिन्न तरह के माध्यमों ने संगीत कला के प्रचार प्रसार हेतु अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी की भांति सूफीमत धारा के अन्तर्गत सूफियाना गायन के अनुसार भिन्न–भिन्न माध्यमों ने अपनी विशेष भूमिका निभाई है। फलस्वरूप वर्तमान में सूफियाना गायन भारतीय संगीत की विभिन्न विधाओं की तरह प्रचारित व प्रसारित होकर विश्व प्रसिद्धि हासिल किए हुए है। सूफियाना गायन के आरम्भ में जहाँ सिलसिले सूफीमत के प्रचार प्रसार के मुख्य केन्द्र थे, और कालांतर से किसी प्रसिद्ध सूफी फकीर या सूफी संत के इस फानी दुनिया से जाने उपरांत उनकी याद में बनाए गए स्थान जो दरगाह के रूप में सम्बोधित हुए, पश्चात् दरगाहें हीं मुख्य रूप से प्रचार प्रसार का केन्द्र रही। फलस्वरूप सूफियाना गायकी अपनी लोकप्रियता विभिन्न माध्यमों के द्वारा हासिल करती गई। इन माध्यमों का विस्तारपूर्वक वर्णन इस प्रकार है :

4.1 दरगाह :

भारत देश विभिन्न सभ्याताओं का देश होने की कारण यहाँ पर बहुत से धर्मों का प्रसार है इस देश की विशेषता यही है कि यहां पर सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है और यहां पर मिलने वाले सभी धर्मों के अपने नियम, कानून एवं धार्मिक स्थल हैं, विभिन्न धार्मिक स्थलों से सम्बन्धित लोगों ने अपनी समझ और सुविधा अनुसार इनको नाम दिया है। हिन्दू समाज का धार्मिक स्थल मन्दिर, सिखों का गुरूद्वारा, ईसाइयों में चर्च, इसी प्रकार सूफी मत में दरगाह को इबादतनुमा स्थान माना जाता है यहां पर आकर लोगों को अल्लाह के होने का एहसास होता है। इस्लाम में इबादत या ज़ियारत करने की विधि और विधान भले ही भिन्न है परंतु फिर भी यह एक मौलिक सत्य है कि दरगाह एक सूफी फकीर के लिए इबादत स्थल होता है। यह किसी दरवेश फकीर या औलिया की कब्र के इर्द–गिर्द होता है जहाँ पर इबादत करने वाले, दुआ मांगने वाले और दूर से आने वाले श्रद्धालु शामिल होते हैं जो कुछ समय के लिए यहां ठहरते हैं।

4.1.1 दरगाह का शाब्दिक अर्थ :

दरगाह शब्द से भाव दरगाह–ए–शरीफ, अदालत, मकबरा, शाही दरबार, ख़ुदा की अदालत, किसी सूफी संत की मज़ार, रोज़ा तीर्थ स्थान आदि है। दरगाह एक सूफी इस्लामिक पुण्यस्थान होता है जो अक्सर किसी प्रतिष्ठत सूफी संत यानि दरवेश की कब्र होती है।

दरगाह शब्द फारसी भाषा का शब्द है जिस का अंग्रेजी अनुवाद *Threshold* है इसका हिंदी में अर्थ दहलीज़, द्वार, चौखट माना गया है। सूफियों में इसका अर्थ ख़ुदा के घर की दहलीज़ माना जाता है जिसके अंदर बहुत से सूफी दरवेश, फकीर, संत, आदि की कब्रें मौजूद होती हैं, इनको दरगाह कहा जाता है। इसको अन्य कई नामों के साथ जाना जाता है जैसे रोज़ा, आस्तान, मज़ार, तीर्थ स्थान आदि। कुछ लोग इनको ख़ानकाह भी कहते हैं लेकिन शाब्दिक अर्थ के अन्तर्गत ख़ानकाह फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है रिबात। रिबात का अर्थ है लोगों से मिलना और उन तक अपना पैग़ाम पहुँचाना, दूसरे मत अनुसार एक ऐसी इमारत जहाँ पर सूफी दरवेश या संत रहते हों जो अपने ख्यालों और विचारों को दूसरों तक पहुंचाते हैं और अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए इबादत करते हैं ख़ानकाह कहलाती है।

''दक्षिण एशिया में ख़ानकाह और दरगाह शब्दों को एक दूसरे के जगह बदल के भी उपयोग में लाया जाता है सभी ख़ानकाह में कुछ बड़े और छोटे कमरे होते हैं जहां सूफी लोग कव्वाली सुनते हैं और अपने मुरशिद को मानते हैं।''[1]

दरगाह की बनावट की बात करें तो इसके मकबरा नुमा भवन के ऊपर एक गोल गुम्बद बनाया जाता है जो अक्सर पुरानी दरगाह में देखने को मिलते हैं। कुछ दरगाहों के चार दरवाज़े भी देखने को मिलते हैं और कुछ में एक द्वार ही होता है जो कि मज़ार के सामने की तरफ होता है जहाँ लोग दुआ पढ़ते हैं। दरवेश अपने मुरशिद को ही अल्लाह तक पहुँचने का ज़रिया मानते है।

पूरे भारतवर्ष में मस्ज़िदों के मुकाबले ज्यादा अनुयाई दरगाहों में ही ज़ियारत करने आते हैं। मस्ज़िद रोज़ की नमाज़ के लिए होती है परंतु ज़्यादातर लोग ईद

1. अमरवन्त सिंह, अरबी–फारसी विच्चों उत्पन्न पंजाबी शब्दावली संकलन, पृ. 390

या जुम्मे (शुक्रवार) के दिन आते हैं परन्तु दरगाहों में लोग अक्सर वीरवार के दिन आते हैं।

इन दरगाहों में लोग बेशकीमती चादरें चढ़ाते हैं और चादर का रंग हरा होता हैं। कई लोग अपनी मन्नत पूरी करवाने के लिए दरगाह की जाली में धागा भी बांधते हैं, लंगर लगवाते या लंगर में खुले मन से दान भी करते हैं। यहां अमीर गरीब का कोई भेदभाव ना करते हुए सबके साथ एक जैसा व्यवहार किया जाता है दरगाह में सेवा व फरियाद करने वाले लोगों को ख़ादिम कहा जाता है। इनकी बाकी लोगों में काफी इज़्ज़त होती है। दरगाह सूफी दरवेश का ठिकाना है और वह चाहते हैं कि उनकी कब्र भी उनके मुरशिद के कदमों में ही बने। इनका मानना है कि सूफी दरवेश कभी भी नहीं मरते बल्कि कब्र में आराम करते हैं। इसीलिए दरगाह को आरामगाह भी कहा जाता है।

भारत के कई शहरों में बहुत से सूफी संतों के समाधिस्तान, दरगाह या मकबरे बने हुए हैं। इन शहरों में दिल्ली, आगरा, मुल्तान, हैदराबाद, फतहपुर सीकरी, पंजाब आदि नाम वर्णनीय हैं। अजमेर में ख़्वाजा जी की दरगाह, दिल्ली में औलिया साहिब, मुंबई में हाजी अली, पंजाब में मण्डाली शरीफ, बाबा मुराद शाह, बापू लाल बादशाह, पीर हैदर शेख़ मलेरकोटला आदि प्रसिद्ध दरगाहें हैं। इन प्रसिद्ध दरगाहों पर बड़ी शानो शौकत से उर्स मनाए जाते हैं और इनमें बहुत सारी कव्वाली मंडलियाँ कव्वाली पेश करके अपने पीरों—मुर्शिदों को अकीदत पेश करते हैं। कव्वाली पेशक्रम को महफिल—ए—समाअ कहां जाता है। सूफी लोगों का मानना है कि संगीत उन्हें ख़ुदा के और करीब कर देता है।

शोध कार्य का संबंध पंजाब से होने के कारण इस अध्याय में पंजाब में स्थित प्रसिद्ध सूफी दरगाहों की बात करेंगे जहाँ हर वर्ष उर्स मनाए जाते हैं और सूफियाना गायन का प्रवाह वर्तमान में भी प्रचलित हैं। जिसका निम्नलिखित वर्णन इस प्रकार है।

4.1.2 पंजाब की प्रसिद्ध दरगाहें :

1. **डेरा बाबा अब्दुल्लाह शाह जी दरगाह, मंडाली शरीफ :**

यह दरगाह फगवाड़ा से कुछ ही दूरी पर गांव मंडाली में स्थित है जो

जिला जालंधर में पड़ता है यह दरगाह बहुत पुरानी है जिस कारण इस दरगाह का नाम पंजाब प्रदेश की दरगाहों में विशेष महत्व रखता है।

सूफियाना गायकी के प्रचार प्रसार में इस दरगाह के योगदान के बारे में बात करते हुए पद्मश्री पूर्ण चन्द वडाली जी कहते हैं कि, ''मंडाली शरीफ दरगाह पंजाब के दरबारों में विशेष महत्व रखती है और वर्तमान समय में प्रसिद्ध सूफियाना गायकी का प्रचार प्रसार करने वाले गायक कलाकार इन्हीं फकीरों के दरबारों की ही देन है।''[1]

इस दरगाह के सन्दर्भ में प्रसिद्ध सूफी कव्वाल करामत फकीर जी कहते हैं कि, ''मंडाली शरीफ की दरगाह कादरी सिलसिले से संबंधित है। इस सिलसिले को इस्लाम धर्म के बानी हज़रत मुहम्मद रसूल पाक की ऑल और हज़रत जनाब गौंस पाक 11वीं वाली सरकार जो शेरे खुदा शाह अली जी की औलाद थे, द्वारा चलाया गया। इसी कादरी सिलसिले में से सय्यद उल शेख बाबा अब्दुल्लाह शाह कादरी हुए हज़रत बाबा गुलाम मोहम्मद शाह कादरी जो गुलामी शाह के नाम से भी जाने जाते थे जिन्होंने इस सिलसिले का आगे संचालन किया।''[2] प्रो. गुरचरन सिंह तलवाड़ा अनुसार, ''सय्यद उल शेख हज़रत बाबा अब्दुल्लाह शाह कादरी जी के बारे में रिवायत है कि आप अरब से भारत आए। आपका जन्म 1785 ई. का माना

1. साक्षात्कार, वडाली, पूर्णचन्द. तिथि 18 मई, 2019, स्थान अमृतसर
2. साक्षात्कार, फकीर, करामत. तिथि 5 मई 2019, स्थान मलेरकोटला

जाता है और इनका जीवनकाल 1785 ई. से लेकर 1910 ई. तक का था।''[1] जिन्होंने इस दरबार की संभाल की और इसे एक नई दिशा की तरफ लेकर गए। अब्दुल्लाह शाह कादरी जी के पश्चात, इनके मुरीद बाबा गुलामी शाह जी ने इसकी देख रेख की। उपरान्त दरबार की सेवा संभाल रहमत बीबी करती रही और हज़रत दाता अली अहमद शाह कादरी इनका सहयोग करते रहे। 1947 में देश के विभाजन उपरांत रहमत बीबी सहित आपके साथ संबंध रखने वाले बाकी सब मुस्लिम भाई पाकिस्तान चले गए तब इस दरबार की देखरेख का काम हज़रत दाता अली अहमद शाह को सौंप दिया गया। दाता अली अहमद शाह जी हज़रत दाता गुलाम मोहम्मद शाह जी के मुरीद थे जिनको दाता गुलामी शाह जी के नाम से भी जाना जाता है। इनका दरबार तहसील बंगा जिला नवांशहर में है। प्रो. गुरचरन सिंह तलवाड़ा अनुसार ''दाता अहमद शाह जी हर रोज़ मंडली शरीफ से 12—14 किलोमीटर के फासले पर बंगा शहर में अपने पीर गुलामी शाह जी के दर्शन के लिए आते थे।''[2] अली अहमद जी की वफात के बाद भजन शाह जी ने गद्दी पर बैठ कर 1954 ई. से 2005 ई. तक दरबार की सेवा की। इनके समय काल में भी कव्वाली व कव्वालों को बहुत सम्मान दिया गया। इनके बाद गुलाम साईं बिल्ला शाह मंडली शरीफ दरबार की गद्दी पर बैठे और वहीं रहते हुए सरकार और दरबार की सेवा करते थे। साईं बिल्ले शाह जी के बाद उमरे शाह जी ने गद्दी संभाली जो मौजूदा सेवादार और गद्दी नशीन हैं। इस दरगाह पर हर वर्ष लगने वाले मेलों व उर्स के बारे में बताते हुए प्रो. गुरचरन सिंह तलवाड़ा जी कहते हैं कि ''अब्दुल्लाह शाह का मेला 30 जुलाई (15 अषाढ़) से 3 अगस्त (19 आषाढ़) तक, साबिर दाता अली अहमद का मेला 12 दिसंबर से 14 दिसंबर, क्रम अनुसार बीबी बंगा वालों का मेला 27 भाद्रों से 29 भाद्रों तक करवाए जाते हैं।''[3]

यहाँ पर होने वाले उर्स के बारे में बताते हुए कव्वाल हरमेश रंगीला जी कहते हैं कि, ''इस मेले का आंरभ सबसे पहले बंगा दरबार में जाकर सजदा सलाम से किया जाता है, फिर कुल्ला शरीफ सजदा किया जाता है। यहां पर सरकार ने अपना शरीर छोड़ा था। इसके पश्चात डेरे में जाकर तकरीबन 4:00 बजे सरकार

---

1. तलवाड़ा, गुरचरन सिंह, सूफीमत विचारधारा : विकास अते सिलसिले, पृ. 183
2. तलवाड़ा, गुरचरन सिंह, सूफीमत विचारधारा : विकास अते सिलसिले, पृ. 186
3. वही, पृ. 187

पर निशान साहिब चढ़ाने की रस्म अदा करने के बाद चिराग रौशन किए जाते हैं और नमाज़ पढ़ी जाती है। इसके पश्चात् नियाज़ का सबाब सरकार को पहुंचाया जाता है व खत्म–ए–दारूर पढ़ा जाता है और फिर बैंड वाले सरकार के दरबार में हाज़री भरते हैं। रात 9:00 बजे के करीब कव्वाली महफिल–ए–समाअ की महफिल का आरंभ किया जाता है। कव्वाली गायन के दौरान सबसे पहले कव्वाली पेश करने का अवसर पगड़ी पुश्त कव्वालों को ही दिया जाता है। फिर उनके बाद बाकी कव्वालों द्वारा गायन पेश किया जाता है, तकी मोहम्मद यहाँ के पगड़ी पुश्त कव्वाल थे उनके बाद उनके सुपुत्र शफ्फी मुहम्मद यहाँ के पगड़ी पुष्त कव्वाल हैं।

2. बाबा हैदर शेख दरगाह, मलेरकोटला :

बाबा हैदर शेख जी की दरगाह मलेरकोटला पंजाब शहर के बीच है जो शेख सदरूद्दीन सदर–ए–जहान जी की है। इनको ही हैदर शेख जी कहा जाता है। जिस जगह इन की दरगाह है इसके इतिहास के बारे में बताया जाता है कि यह स्थान एक टिल्ला था। जहां बाबा जी ने कुल्ली बनाकर रहना शुरू कर दिया। यह समय बहलोल लोदी का था, बहलोल लोदी बाबा जी की करिश्मे अपने अहलकारों से सुनते और हैरान होते थे। कहा जाता है कि एक बार बहलोल लोदी जंग के लिए जा रहे थे तो रास्ते में जब स्थान को पार करके जाने लगे तो लोधी जी के अहलकारों ने उनको कहा कि क्यों ना हैदर शेख जी की परख की जाए। तो वे बाबा जी के पास गए और कहा कि बताएं जिस जंग के लिए हम जा रहे हैं

वहां से विजयी होकर लौटेंगे या नहीं, तो बाबाजी ने कहा कि आप जीतेंगे और यह सच हुआ। इससे खुश होकर बहलोल लोदी जी ने बाबा जी को एक बेहतरीन घोड़ा भेंट किया परंतु बाबा जी ने उस घोड़े को हलाल कर के लंगर में बाँट दिया। यह देखकर राजा क्रोधित हुआ और उसने दिल्ली से मलेरकोटला आकर बाबाजी से पूछा कि आपने ऐसा क्यों किया, मुझे मेरा घोड़ा वापस कीजिए। तब बाबा जी ने कहा कि जाओ बाहर देखो जो घोड़ा आपका है, उसको ले जाओ। इस पर जब राजा बाहर आया तो उसने देखा कि बाहर ठीक वैसे ही रूप–रंग, आकार के कई घोड़े इधर–उधर घूम रहे थे जैसा उन्होंने बाबा जी को भेंट किया था। राजा यह देख कर और उसने बाबा जी से क्षमा मांगी। और विनती की कि मैं अपनी लड़की की शादी आपसे करना चाहता हूँ। बाबा जी ने हाँ कर दी और शादी में मलेरकोटला रियासत जागीर को दहेज के रूप में बाबा जी को दे दी, जिसमें सैंकड़ों गाँव आते थे। बाबा जी के तीन लड़के थे जिनकी मज़ार भी इसी दरगाह में है। इनका वंश इस दरगाह की देखरेख करता है। गर्मियों के समय यहां रौनक अधिक होती है। वैसे हर गुरुवार यहां लोग बाबा जी के दर्शन के लिए आते हैं परंतु मार्च से जून तक 4 महीनों में पूर्णमासी के समय मेला लगाया जाता है। इस दरगाह की खासियत यह है कि यहां एक दीवार है जो शेख हैदर जी के देहांत के समय एक ही रात में तैयार की गई थी। वो दीवार आज भी मौजूद है और उसी रूप में है जिस रूप में कई साल पहले इसको बनाया गया था। माना जाता है कि एक रात में इतनी बड़ी दीवार खड़ी करना दिव्य शक्ति के कारण ही संभव हो पाया होगा। इस दरबार के पैरोकारों ने आज भी इस दीवार की ऐतिहासिक पहचान बनाए रखने के लिए इसको आधुनिक ढंग में परिवर्तन ना करके, उसके वास्तविक रूप को ही संभाल कर रखा है।

3. दरबार बाबा मुराद शाह, नकोदर :

यह दरगाह जालंधर से कुछ ही दूरी पर नकोदर शहर में स्थित है। नकोदर का फारसी अनुवाद नेकी का दर है। यह बहुत ही प्रसिद्ध शहर है। इस शहर की प्रसिद्धि भी बाबा मुराद शाह जी की दरगाह से ही है इसके अलावा यहां पर बहुत

सारे सूफी फकीरों की दरगाहें मौजूद हैं जिनमें डेरा बापू लाल बादशाह, साईं सूरा पूरा जी आदि। डेरा बाबा मुराद शाह जी की दरगाह विश्व प्रसिद्ध है।

पंजाब के प्रसिद्ध कव्वाल करामत फकीर इस दरगाह की लोकप्रियता की बात करते हुए कहते हैं कि ''बाबा मुराद शाह हज़रत जनाब गौंस पाक जिनको अक्सर लोग पीरां दे पीर 11वीं वाली सरकार कहते हैं के मुरीद हैं। इनका जन्म 1924 ईस्वी में पिता छज्जू मल और माता लक्ष्मी के घर हुआ। आपका पहला नाम विद्यासागर भल्ला था। इन्होंने बिजली बोर्ड दफ्तर में एसडीओ की नौकरी भी की। फिर नकोदर आकर बाबा शेर शाह जी की संगत में फकीर बन कर यहां सेवा करने लगे। बाबा शेर शाह जी के वचनों से ही आपका नाम मुराद शाह जी पड़ा उन्होंने अपने वचनों में कहा कि विद्यासागर तू आज से मुराद शाह के नाम से जाना जाएगा और तू सभी दुखी गरीबों की मुरादें पूरी करेगा। तभी से आप इस डेरे के संचालक बन गए और मुर्शिद की याद में समय व्यतीत करने लगे

उनके कहे अनुसार इनके शरीर को यहीं पर दफनाया गया ऐसा करके उनकी वही मज़ार बना दी गई। बाबा मुराद शाह जी के पश्चात माता कौशाली जी ने इस दरबार की सेवा संभाली। इनका गांव लद्धड़ां था। इन्होंने लंबा समय यहां बिताया

और उर्स की रसम को निरंतर जारी रखा।''[1] लाडी शाह जी का जन्म 25 सितंबर 1946 को भल्ला परिवार में हुआ था आपका नाम आपके माता पिता ने विजय कुमार भल्ला रखा जो समय पाकर साईं गुलाम शाह के नाम में तब्दील हो गया। साईं जी मुराद शाह जी के दरबार में आए और यही रहने लगे यहां पास की दरगाह में एक माता जी रहते थे जो बापू के नाम से जाने जाते थे। उनकी सेवा भक्ति में लीन गुलाम शाह जी ने उनकी बहुत सेवा की। बापू जी ने साईं को लाडी कहकर बुलाया। वह साईं जी को मेरा लाडी कहते थे जो बाद में चलकर साईं लाडी शाह जी के नाम से जाने जाने लगे। वे कव्वाली गायन के बहुत शौकीन थे। अक्सर कव्वालों से हीर सुना करते थे। 1 मई 2008 ईस्वी को साईं लाडी शाह जी इस दुनिया से अलविदा हो गए। आप की याद में 1–2 मई को यहाँ पर उर्स मनाया जाता है। यहां 1 मई सुबह से मेला आरंभ हो जाता है जिसमें पहले झंडे की रसम होती है। शाम को चिराग रौशन करने के उपरांत कव्वाली की महफिल का आगाज़ होता है। कव्वाली नियम अनुसार ही गाई जाती है। इस गायन की शुरुआत नाअत–ए–रसूल द्वारा की जाती है। उसके बाद शेरे खुदा की शान बयान की जाती है और फिर 11वीं वाली सरकार और दरबार की सिफतें गाई जाती हैं। यहां के बारे में बताते हुए प्रसिद्ध कव्वाल शौकत अली दीवाना जी कहते हैं कि ''इस दरबार के पगड़ी पुश्त कव्वाल पंजाब के प्रसिद्ध कव्वाल करामत फकीर जी हैं।''[2] डेरा बाबा मुराद शाह की दरगाह में कव्वाली गायन शैली बहुत प्रचारित हुई है। यहां पर हिंदुस्तानी कव्वालों के साथ–साथ पाकिस्तानी कव्वाल गायकों ने भी हाज़िरी भरी है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए यहाँ के पगड़ी पुश्त कव्वाल करामत फकीर जी कहते हैं कि, ''इस दरबार ने सूफी संगीत को नया मार्ग दिखाने का कार्य किया है। यहां पर लंबे समय से कव्वाली की महफिलें होती आ रही है। यहां मौजूद तीन मन्चों का बड़ी खूबसूरती से निर्माण किया गया है ताकि बाहर से आए हुए कलाकार अपनी कलाकारी का प्रस्तुतीकरण आसानी से कर पाए और श्रोतागण भी उन सब को आसानी से देख पाएं व उनका संगीत सुन पाएं। इस दरबार में बहुत सारी कव्वाल मंडलियों ने अपनी हाज़िरी भरी है, जहां पर उन्होंने सूफियाना कलाम पेश

1. साक्षात्कार, फकीर, करामत. तिथि 5 मई 2019, स्थान मलेरकोटला
2. साक्षात्कार, दीवाना, शौकत अली. तिथि 6 मई 2019, स्थान पटियाला

करके श्रोतागणों को मुग्ध किया है और कर रहे हैं जो कि पीरों फकीरों की सिफ्त में ही लिखे जाते हैं। अब तक इस दरगाह में पंजाब के प्रसिद्ध गायक कलाकारों में उस्ताद पूर्ण शाह कोटी, शरीफ मोहम्मद, कव्वाल शकीर मोहम्मद, कव्वाल हरमेश रंगीला, शकीर साबिर कव्वाल, कव्वाल शौकत अली मतोई, कव्वाल करामत फकीर, सरदूल सिकंदर, गुरदास मान, सुरिंदर शिंदा, कुलदीप मानक, मोहम्मद शरीफ, हंसराज हंस, आदि कव्वाल एवं लोक कलाकार अपने सूफियाना गायन की प्रस्तुति देते आ रहे हैं। इसी की भांति वर्तमान में पंजाब के युवा गायक कलाकारों में कव्वाल सरदार अली, कव्वाल विनीत खान, ज्योति नूरा, कंवर ग्रेवाल, लखविंदर वडाली, मास्टर सलीम आदि शामिल हैं जो सूफी फकीरों के सूफी कलामों अथवा सूफी रचनाओं को गाकर सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में अपना योगदान दे रहे हैं।

4. दरबार हज़रत सैय्यद पीर बदर शाह दीवान : बटाला

यह दरगाह बटाला शहर से हरगोविंदपुर को जाते समय 6–7 किलोमीटर के फासले में गांव मसानियां में सुशोभित है। इस दरगाह शरीफ की तामीर महाराजा रणजीत सिंह द्वारा करवाई गई। मिली जानकारी के मुताबिक हज़रत पीर बदर शाह दीवान मूल रूप में बगदाद के रहने वाले थे। 1780 ईस्वी के आसपास यह बगदाद से लाहौर होते हुए बटाला आए और फिर बटाला के नजदीक गांव मसानिया में आकर रहने लगे। इनके नाम के साथ कई करामातें जुड़ी हुई है। माना जाता है कि महाराजा रणजीत सिंह के विदेश मंत्री फकीर अजीजुद्दीन हज़रत का पीर बदर शाह दीवान पर विश्वास था। महाराजा रणजीत सिंह ने पेशावर को फतह करने के

लिए हज़रत पीर बदर शाह से दुआ करवाई और उनकी पेशावर में जीत हुई। खुशी में महाराजा रणजीत सिंह ने पीर जी की ख़ानकाह का निर्माण करवाया। दरगाह में हज़रत पीर बदर शाह के साथ पाँच मज़ारें और भी स्थापित हैं जिसमें एक मज़ार उनकी बेगम हज़रत बीबी मुरस्सा, एक इनके साहिबज़ादे हज़रत सय्यद अली साबर, और बाकी तीन मज़ारें और हैं जो इनके पोतों की बताई जाती हैं। देश के विभाजन के समय मुस्लिम लोगों को मजबूरी कारण पाकिस्तान जाना पड़ा। 1947 ईस्वी के पश्चात् इस दरगाह की सेवा संभाल और देखरेख का कार्य साईं साधु शाह ने निभाया। प्रो. गुरचरन सिंह तलवाड़ा अनुसार, ''आज के समय में दरबार की सेवा संभाल का काम इसी गांव के रहने वाले हज़रत बाबा यूनस शाह बाखूबी निभा रहे हैं जो आई हुई संगतों की अगवाई और रहनुमाई करते हैं। हर वर्ष 5–6 अषाड़ को वार्षिक उर्स मुबारक बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।''[1] इन मेलों में सूफियाना कलाकार अपनी हाज़री भरते हुए सूफियाना गायकी को श्रोताजनों के सनमुख रखते हैं। यहाँ के उर्स में वडाली बन्धू, शौकत मतोई अली, मोहम्मद शरीफ आदि सूफी कलाकार शिरकत करते हैं और युवा कलाकारों द्वारा भी इस मर्यादा के प्राचार प्रासार में भूमिका निभाई जा रही है

5. दरबार कादिरिया फाजिलिया बटाला शरीफ/दरबार पीर फाजिल शाहः

पंजाब के शहर बटाला के मियां मोहल्ले में प्रसिद्ध सूफी दरबार कादरिया फाजिलिया गौंसिया स्थापित है। हज़रत शेख सय्यद मोहम्मद फाज़िलदीन शाह इस दरबार के संस्थापक थे। जिनकी पृष्ठभूमि गौंस–उल–आज़म शेख अब्दुल कादिर जिलानी 11वीं वाली सरकार के साथ मिलती है। यह अपने जमाने के प्रसिद्ध सूफी बुजुर्ग हुए हैं जिनकी पीरी मुरीदी का सिलसिला जम्मू कश्मीर तक फैला हुआ था। इनको बटाला शहर में पीर फाज़िल शाह के नाम से ही जाना जाता है। शोधार्थी द्वारा विभिन्न कलाकारों से प्राप्त की गई जानकारी अनुसार पीर फाज़िल शाह जी की खिलाफत का समय 1684 से 1739 ई. तक का है। इनकी गद्दी इनके साहिबज़ादे हज़रत सय्यद गुलाम कादिर शाह ने संभाली जो बटाला के ही रहने वाले थे। इनका जीवन काल 1695 ईस्वी से 1763 ईस्वी तक का था। इनकी

1. तलवाड़ा, गुरचरन सिंह,, सूफीमत : विचारधारा, विकास अते सिलसिले, पृ. 206

खिलाफत का समय 1739 से 1763 ई. तक का है। भाव इन्होंने पिता की वफात के पश्चात 1739 से 1763 ईस्वी तक दरबार की वागडोर संभाली। दरबार बटाला के यह सूफी दरवेश अपने ज़माने के पहुँचे हुए बुजुर्ग थे जिनकी पास के इलाके में और सरकारे दरबारे में बड़ी मान्यता थी। प्रो. गुरचरन सिंह तलवाड़ा के अनुसार "हज़रत साईं बुल्ले शाह जवानी की अवस्था में बटाला के इलाके में आए थे, वे आबिद, ज़ाहिद और इबादत वाले थे लेकिन पीर वाले नहीं थे। कहते हैं कि साईं बुल्ले शाह के अन्दर कुछ रूहानी जलवा प्रगट हो चुका था और यह हज़रत मनसूर की तरह कहते फिरते थे कि 'मैं अल्लाह हूँ।' मुस्लमानों का समय था, बात मुफ्तियों और काज़ियों तक पहुंची। उन्होंने बुल्लेशाह पर कुफर का फतवा लगाने की तैयारी कर ली। यह साईं बुल्ले शाह का ऐसा गुनाह था जिसके लिए उनको मौत नसीब हो सकती थी। तब किसी ने मश्वरा दिया कि इनको दरबार कादरिया फाज़िलिया के मुखी हज़रत पीर फाज़िल दीन शाह के पास ले जाएं। उन्होंने हज़रत साईं बुल्ले शाह जी का बचाव करते हुए कहा की यह अभी अल्ला हैं भाव अभी कच्चा है। यह अपने आपको अल्लाह नहीं बल्कि अल्ला (कच्चा) कह रहा है। इस तरह इन्होंने बुल्ले शाह जी का बचाव करके उनको नसीहत दी के वह हज़रत शाह इनायत कादरी के पास लाहौर चले जाएं और रूहानियत के मार्ग में पक्के बने। इसके पश्चात ही साईं बुल्ले शाह जी लाहौर जाकर हज़रत इनायत शाह कादरी के मुरीद बनें और रुहानियत क्षेत्र में बा कमाल रूतबा हासिल किया।"[1]

बटाला शहर के मियां मोहल्ले में स्थित कादरिया फाज़िलिया में हज़रत सय्यद मोहम्मद फाजिल दीन शाह की मज़ार शरीफ बीच में बनी हुई है आसपास के बाद के जा–नशीन खलीफाओं की मज़ार मुबारिक साथ साथ में ही स्थापित है। इनके पुत्र हज़रत सय्यद गुलाम कादिर शाह कादरी का मज़ार शरीफ भी साथ में ही स्थित है। शोधार्थी द्वारा एकत्रित की गई जानकारी के अनुसार वर्तमान में दरबार का प्रबंध हज़रत जनाब मोहम्मद इकबाल कादरी जी की देखरेख में चल रहा है जो कि नेकदिल और पाक़ रूह के दरवेश हैं। हज़रत मोहम्मद फाजिल दीन शाह कादरी के खानदान के लोग देश के बंटवारे के समय पाकिस्तान चले गए और पाकिस्तान में सूफी बुजुर्गों के पैगाम को प्रचारित कर रहे हैं। दरबार शरीफ के

1. तलवाड़ा, गुरचरन सिंह, सूफीमत : विचारधारा, विकास अते सिलसिले, पृ. 204

प्रबंधक और इंचार्ज हज़रत जनाब मोहम्मद इकबाल कादरी जी के मुताबिक दरबार में ग्यारहवीं शरीफ और हज़रत आज़म की याद को समर्पित लंगर और भंडारे करवाए जाते हैं जिनमें दूर दूर से और कश्मीर के इलाके से इन को मानने वाले आकर शामिल होते हैं। उर्सों के मौके पर यहाँ कव्वाली की महफिलों का आयोजन किया जाता है जहाँ पंजाब के प्रसिद्ध कव्वाली कलाकार एवं सूफी कलाकार हाज़री भरते हैं।

6. दरबार हज़रत बाबा शाह जमाल लाचोवाल शरीफ : होशियारपुर टांडा

होशियारपुर टांडा उड़मुड़ सड़क से जाते समय कस्बा बुलोवाल से पहले एक गांव लाचोवाल आता है। इस मुख्य सड़क के बिल्कुल नज़दीक हज़रत बाबा शाह जमाल का दरबार सुशोभित है। अपने समय में यह बड़े ही पहुंचे हुए सूफी बुजुर्ग हुए हैं। वर्तमान समय में दरबार की देखरेख और सेवा संभाल हज़रत बीबी अनवर जी कर रहे हैं। प्रो. गुरचरन सिंह तलवाड़ा अनुसार, ''हज़रत बाबा शाह जमाल जी सूफी सिलसिले के साथ संबंध रखते थे और अपने समय के वली अल्लाह हुए हैं। हज़रत बाबा शाह जमाल से संबंधित एक आस्ताना पास के गांव सेहजोवाल में बना हुआ है जहां बाबाजी ने चिल्ला काटा था। देश के विभाजन के समय इनके खानदान के लोग पाकिस्तान चले गए। इस इलाके में इनकी बहुत ही मान्यता है। हज़रत बीबी अनवर जी का पुश्तैनी गांव कस्बा बंगा के नजदीक गांव शोतरां है। बचपन से ही इनका झुकाव फकीरी की तरफ था। दरगाह मंडाली शरीफ के गद्दी नशीन हज़रत दाता अली अहमद शाह कादरी की सोहबत इन्होंने

बचपन से ही की है। दाता जी की वफात 1985 ईस्वी के पश्चात बीबी अनवर जी 20 साल तक दरबार हज़रत शेख अब्दुल्लाह शाह कादरी मंडाली शरीफ में रहकर सेवा करते रहे। इसके अतिरिक्त हज़रत बीबी अनवर जी निम्रता की मूरत, इबादत और बंदगी वाले, नेकदिल और स्नेही स्वभाव की मालिक हैं जो सबके साथ मोहब्बत करते हैं और लोगों को अल्लाह की बंदगी का पैगाम देते हैं। इन्होंने लोगों को अंधविश्वासों की अज्ञानता से बाहर निकाल कर एक परमात्मा की इबादत के साथ जोड़ा। उन्होंने बताया कि मंडाली शरीफ के गद्दी नशीन और वर्तमान समय के प्रसिद्ध सूफी पीर हज़रत दाता अली अहमद शाह कादरी अक्सर लाचोवाल आकर हज़रत बाबा शाह जमाल की मज़ार मुबारिक पर दुआ फातिहा पढ़ते हैं। हज़रत बाबा शाह जमाल कादरी गांव लाचोवाल में हज़रत बीबी अनवर जी की रहनुमाई और इलाके के श्रद्धालुओं के सहयोग से साल में दो उर्स मनाए जाते हैं। ''एक उर्स 14, 15 और 16 जेष्ठ को मनाया जाता है। जिसको बड़ा उर्स कहा जाता है। दूसरा उर्स हज़रत दाता अली अहमद शाह कादरी की याद को समर्पित होता है जो हर वर्ष 12 दिसंबर को मनाया जाता है।''

7. दरबार पीर बाबा वलैत शाह और बाबा मेहंदी शाह :

पंजाब में सूफी मत का प्रचार प्रसार करने के लिए नौशाही कादरी उप सूफी सिलसिले के सूफी बुजुर्गों का खास योगदान रहा है। पंजाब के इतिहासिक शहर अमृतसर के बिल्कुल नजदीक गांव फतेहपुर नौशाही कादरी सिलसिले के सूफियों का गढ़ रहा है। इस गांव फतेहपुर के बाहर की तरफ नज़दीक झब्बाल रोड अमृतसर में एक आलीशान दरबार है। प्रो. गुरचरन सिंह तलवाड़ा अनुसार ''इस दरगाह का निर्माण बाबा बोहड़ शाह नौशाही कादरी जी की देखरेख में हुआ है यह आलीशान दरबार हज़रत पीर बाबा वलैत शाह मोतियां वाली सरकार और हज़रत बाबा मेहंदी शाह की आखिरी आरामगाह है। आलीशान रोज़ा शरीफ के अंदर हज़रत पीर बाबा वलैत शाह और सरकार बाबा मेहंदी शाह के मज़ार मुबारिक हैं यह दोनों सूफी बुजुर्ग नौशाही कादरी सूफी सिलसिले के साथ संबंधित हैं।''[1] यहां पर वर्ष में दो उर्स बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। आसपास के लोगों में इनकी

1. तलवाड़ा, गुरचरन सिंह, सूफीमत : विचारधारा, विकास अते सिलसिले, पृ. 198

मान्यता बहुत ही ज्यादा है जिस कारण लोग दूर–दूर से यहां सूफी दरवेशों के दरबारों में हाज़िरी देने के लिए पहुंचते हैं।

8. दरबार हज़रत पीर शेर शाह वली घड़ियाला शरीफ :

हज़रत पीर शेर शाह वली की निस्बत (सम्बन्ध) नौशाही कादरी सिलसिले के साथ है। जो सूफी सिलसिला कादरी का उप सूफी सिलसिला है। भारतीय पंजाब में नौशाही कादरी सिलसिले के सबसे प्रसिद्ध सूफी बुजुर्ग हज़रत पीर शेर शाह वली माने जाते हैं जो वली अल्लाह थे जिनका नाम नौशाही कादरी सिलसिले में बहुत ही सम्मान से लिया जाता है। पंजाब के जिला तरनतारन में पट्टी खेमकरण सड़क पर स्थित गांव घड़िआल शरीफ में शेर शाह वली और उनके परम मुरीद और खलीफा बाबा सिपाहिये शाह के आलीशान दरबार बने हुए हैं। जिनकी इलाके में बेहद मान्यता और मकबूलीयत है। शोधकर्ता द्वारा दरबार की ऐतिहासिक जानकारी के बारे एकत्रित किए गए तथ्यों के अनुसार सिपाहिआ नाम का व्यक्ति पीर शेरशाह वली का खादिम था। रात को बारिश होने लगी वह कमरा जिसमें सरकार पीर शेर शाह वली रह रहे थे में से पानी टपकने लगा। शेरशाह वली जी ने अपने खादिम सिपाहिये को कहा कि छत पर जाकर कोई इंतज़ाम करके आए। खादिम सिपाहीया दो तीन बार छत बंद करने के लिए गया लेकिन बारिश का पानी टपकना बंद ना हुआ तो जिस जगह से छत टपक रही थी उस जगह पर वह उल्टा लेट गए तो पानी टपकना बंद हो गया। साईं कंवर शाह चिश्ती साबरी अमृतसर वालों ने बताया है कि हज़रत पीर शेर शाह वली जानी जान थे जब सुबह आवाज मारी तो पूछा के सिपाहीए तुम कहां हो तब खादिम सिपाही ने कहा कि छत पर बारिश के पानी को टपकने से बंद करने के लिए पेट के बल लेटा हुआ हूँ। इस बात पर शेर शाह वली ने खुश होकर कहा कि आज से तू सिपाहीआ से सिपाहिये शाह हो गया है। हज़रत पीर शेर शाह वली और उनके इस खादिम

सिपाहीए शाह के दरबारों की देखरेख और वार्षिक उर्सो का प्रबंध एक गठित कमेटी की निगरानी के पास है। पश्चिमी पंजाब और वर्तमान पंजाब के विभिन्न इलाकों से लोग दरबार शरीफ की जियारत के लिए आते हैं और यहां हाजिरी भरते हैं। इनमें सूफियाना गायन कलाकार भी शामिल होते हैं और अपने सूफियाना कलामों के द्वारा श्रोतागणों को मन्त्रमुग्ध करते हैं।

9. दरबार हज़रत पीर कलंदर कादर बख्श, बीरमपुर :

यह दरगाह साधोवाल के बिल्कुल नजदीक गांव बीरमपुर शरीफ तहसील गढ़शंकर (ज़िला होशियारपुर) के पास है। इलाके में इस कामिल सूफी बुजुर्ग को हज़रत मियां कादर बख्श और इस दरगाह को रोजा शरीफ करके जाना जाता है। प्रो. गुरचरन सिंह तलवाड़ा जी के अनुसार, ''इनका समय 18वीं 19वीं सदी का है और इनकी वफात का समय 1827 ई. है। इस समय महाराजा रणजीत सिंह के राज का जमाना था। आप अली मुअज्ज़म कादरी गढ़शंकर वालों के मुरीद और खलीफा थे। इन्होंने 36 साल तक कठिन इबादत की और रूहानियत के क्षेत्र में बा–कमाल प्राप्ति की। इनके उत्तराधिकारी खलीफा में हज़रत मियां खरायिती शाह शामिल हैं जिनकी मज़ार इनके दरबार के बिल्कुल सामने है। हज़रत मियां खरायिती शाह की वफात का साल 1912 ई. माना जाता है।''[1] हज़रत मियां खरायिती शाह के उत्तराधिकारी हज़रत पीर जलालुद्दीन और हज़रत पीर गुलाम गौंस थे जो दरगाह हज़रत पीर कलंदर कादर बख्श की देखरेख और संभाल भी करते हैं और हज़रत पीर कलंदर कादर बख्श के रूहानी वारिस थे। प्रो. गुरचरन सिंह तलवाड़ा जी आगे बताते हैं, ''हज़रत पीर गुलाम गौस हकीमी का काम करते थे और गरीब लोगों को मुफ्त में दवाइयां देते थे और बाकियों से नामात्र पैसे वसूल करते थे ताकि दवा को तैयार किया जा सके। बंटवारे के समय आपके उत्तराधिकारी खलीफा हज़रत पीर जलालुद्दीन और हज़रत पीर गुलाम गौंस पाकिस्तान चले गए।''[2] बीरमपुर शरीफ तहसील गढ़शंकर ज़िला होशियारपुर में

1. तलवाड़ा , गुरचरन सिंह, सूफीमत : विचारधारा, विकास अते सिलसिले, पृ. 182
2. पृ. 182

हज़रत पीर कलंदर कादर बख्श का वार्षिक उर्स 20 कतक से 23 कतक तक बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

10. दरबार हज़रत पीर अली मुअज़्म कादरी, गढ़शंकर :

कादरी सूफी सिलसिले के कामिल सूफी दरवेश हज़रत पीर अली मुअज़्म कादरी की शानदार दरगाह जिला होशियारपुर की तहसील गढ़शंकर में स्थित है। यह दरगाह बड़ा रोजा के नाम से काफी प्रसिद्ध है। प्रो. गुरचरण सिंह तलवाड़ा अनुसार ''हज़रत पीर अली मुअज़्म कादरी का समय अठारवीं सदी का है। यह सिख मिसलों के राज के समय मौजूद थे। हज़रत पीर कलंदर कादर बख्श बीरमपुर शरीफ वालों के पीर–ए–तरीकत थे, हज़रत पीर अली मोअज़्म कादरी करनी वाले बुजुर्ग होकर गुज़रे हैं जिनकी इस इलाके में बेहद मान्यता है।''[1] सन 1947 ईस्वी में देश के विभाजन के समय इनके उत्तराधिकारी पाकिस्तान चले गए। दरगाह के अहाते में एक शानदार मस्जि़द बनी हुई है जहां पर मौलवी अज़ीज़–उल–रहमान इमाम हैं और दरबार की देखभाल कर रहे हैं। शोधार्थी द्वारा एकत्रित की गई जानकारी के अनुसार ''अली हसन कादरी जी का वार्षिक उर्स हर वर्ष फरवरी के महीने में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। जहां पर दूर–दूर से लाखों श्रद्धालु दरबार में हाजिरी देने के लिए पहुंचते हैं।''[2]

11. बाबा बुढ्ढन शाह अली दरबार दरगाह :

हिन्दुस्तान के उत्तरी हिस्से में मौजूद पंजाब राज्य में रूप नगर इलाके में बसे हुए इलाके कीरतपुर साहिब में बाबा बुढ्ढन शाह अली दरबार काफी प्रसिद्ध है।

1. वही, पृ. 181
2. साक्षात्कार, मोहन, राजेश. तिथि 13 नवम्बर, 2018, स्थान फरीदकोट

सिखों के छठे गुरु श्री हरगोबिंद साहिब जी ने 1627 में अपने बेटे गुर्दत्ता के ज़रिए केहनूर के राजा ताराचंद से ज़मीन खरीद कर इस शहर को कायम किया था।

सतलुज नदी के किनारे बसा हुआ यह शहर रूपनगर से उत्तर की ओर 30 किलोमीटर आनंदपुर से दक्षिण की ओर 10 किलोमीटर और चंडीगढ़ से 90 किलोमीटर की दूरी पर बसा हुआ है। एक बहुत बड़े मुस्लिम संत पीर बाबा बुढ्ढन शाह की यादगार इस स्थान से जुड़ी हुई है, उनकी याद में ही यह दरगाह बनाई गई है जिसके दीदार के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं। पीर बाबा की यह दरगाह सारी दुनिया में प्रसिद्ध है। जम्मू हवाई अड्डे के पास भी इनकी एक दरगाह मौजूद है। यह दरगाह/ख़ानकाह बुड्डन अली शाह जी के नाम से जानी जाती है सरकारी दस्तावेज़ों के अनुसार यह दरगाह पीरां दे पीर वाहिद इमाम–ए–मुल्क बुड्डन अली शाह के नाम से दर्ज है। इनकी वास्तव कब्र कीरतपुर में है जहां उन्हें अपनी मर्ज़ी से दफनाया गया था। यह दरगाह 4 किलोमीटर पूर्व की ओर एक पहाड़ पर मौजूद है। बाबा बुढ्ढन शाह जी के लिए बाबा गुरदित्ता जी के मन में बहुत आदर था। उन्होंने ही कीरतपुर साहिब में बाबा बुढ्ढन शाह जी की दरगाह को बनाया था और कहा था कि जो भी उनके पास आएगा वह बाबा बुढ्ढन शाह जी की दरगाह में सजदा करने जरूर जाएगा। माना जाता है कि बाबा बुढ्ढन शाह जी 800 साल तक ज़िंदा रहे, जिस कारण उनको बुढ्ढन शाह जी के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म गुरु नानक जी के जन्म स्थान तलवंडी साबो पाकिस्तान में हुआ जो ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है। बचपन से ही बाबा जी अमन पसंद और बिल्कुल संतो जैसे रूहानी फितरत वाले थे। यह अपना ज्यादातर समय

अल्लाह की इबादत और भक्ति भाव में लीन रहते हुए बिताते थे। वह एक ऐसे मुसलमान सूफी संत थे जिन्होंने हरगोबिंद राय जी के समय में ख़्यालों को कबूल किया। इसलिए इनकी दरगाह में सिख और इस्लाम दोनों मज़्हबों के लोग आते हैं और यहां दोनों धर्मों के लोगों की इबादत करने के तरीके देखने को मिलते हैं। जब बाबा बुढ्ढन शाह जी कीरतपुर साहिब आए थे तो यह शहर कायम नहीं हुआ था। यह शहर कायम होने व बुढ्ढन शाह जी की दरगाह बनने की कहानी इस तरह है कि केहनूर के काले पहाड़ पर बाबा बुढ्ढन शाह रहा करते थे। उनके पास कुछ बकरियां और शेर भी थे। इन बकरियों को शेर ही जंगल में चराने लेकर जाया करते थे। जब बाबा करीब 500 साल के थे तब एक दिन सिखों के पहले गुरु नानक देव जी रूहानी मुद्दों पर बातचीत करने के लिए बाबा जी के पास आए। बाबा जी के शेर बकरियों को लेकर लौटने वाले थे। बाबा जी को डर था कहीं उनके शेर नानक जी पर हमला ना कर दे। बाबा जी ने गुरू नानक देव जी को अपने डर की वजह बताई तो इस पर नानक जी ने कहा कि अगर आपके शेर आपको नहीं खाते तो वह मुझे भी नहीं तंग करेंगे। जब शेर आए तो शेर गुरू नानक देव जी के सामने भी सिर झुका कर खड़े हो गए और उनके कदमों को चूमा।यह देखकर पीर बाबा हैरान हो गए और उन्हें नानक जी की रूहानी शख्सियत के बारे को समझते हुए देर ना लगी। उन्होंने नानक जी को एक कटोरे में दूध पीने को भेंट किया। नानक जी ने सिर्फ आधा गिलास दूध पिया और बाकी आधे गिलास दूध को संभाल कर रखने को कहा, उन्होंने कहा कि छठे वंश के रूप में आकर गुरु हरगोबिंद जी के रूप में यह दूध पीएंगे। तब बाबा जी ने शंका जताई कि तब तक तो वह ज़िंदा ही नहीं रहेंगे क्योंकि गुरू नानक देव जी के समय में ही वह काफी बूढ़े हो चुके थे। तब गुरू नानक देव जी ने उन्हें यह भरोसा दिलाया कि वह गुरु हरगोबिंद जी के वक्त तक ज़िंदा रहेंगे और ऐसा ही हुआ। गुरु हरगोबिंद राय जी बुढ्ढन शाह जी के पास आए और दूध भी पिया। ऐसे पीर बाबा जी का इंतजार खत्म हुआ, वह बहुत खुश हुए और उन्होंने हरगोबिंद जी से उस इलाके में एक शहर बसाने की तमन्ना को ज़ाहिर किया। गुरु हरगोबिंद राय जी ने वहां एक शहर को बसाया और उसका नाम कीरतपुर रखा। इस वाक्य के बाद 1643 ईस्वी में बुढ्ढन बाबा जी ने आखिरी सांस ली। उसी पहाड़ पर बाबा

गुरदित्त जी ने पीर बाबा को दफना कर वहां दरगाह बनवाई। इस दरगाह के पास रास्ते में एक मेहराब (चिन्ह) पड़ता है जिसके ऊपर दोनों और दो छोटी मीनारें हैं और बीच में दो शेर खड़े हैं। शेर और बकरी बुढ्ढन शाह जी की दरगाह की पहचान हैं क्योंकि वे शेर और बकरियों को अपने पास रखा करते थे। आगे थोड़ी ऊंचाई पर हरे रंग की बुढ्ढन बाबा की दरगाह है। इसके ऊपर बीचो में दो सफेद मीनारें हैं जिनके गुम्बद पर हरी धारियां हैं और उन हरी धारियों की के बीच में इस्लाम धर्म के निशान बने हुए हैं। गुम्बद को सहारा देने के लिए खंभों के बीच हरे शीशे लगे हुए हैं। दरगाह के दाखिले के बाहर एक चबूतरे पर हरा झंडा गाढ़ा हुआ है जिसके सामने एक चिराग जलता रहता है। जो भी यहां पीर जी की दीदार के लिए आते हैं वे उस चिराग में तेल डालते हैं ताकि वे लगातार जलता रहे। चबूतरे के पास एक मंडप में शेर और बकरियों के बुत रखे हुए हैं। इसके इलावा दूसरी ओर भी शेर और बकरियों के बुत रखे हुए हैं। दरगाह की दीवारों पर सुंदर जाली नुमा डिज़ाइन बने हैं। यहां पर सिख गुरु नानक देव जी, गुरु हरगोबिंद जी, मक्का मदीना और बुढ्ढन बाबा की जिंदगी से ताल्लुक रखने वाली कहानियों को बयान करने वाली तस्वीरें दीवारों पर लगी हुई हैं। बाबा की दरगाह के अंदर कब्र पर और झंडे के चबूतरे पर अंक 786 लिखा हुआ है जो मुसलमानों के लिए बहुत ही खास माने जाते हैं, दरअसल अरबी में लिखे कुरान के शब्द 'बिस्मिल्लाह ए रहमान ए रहीम' का जोड़ 786 होता है। इसलिए इसे बहुत ही पाक़ माना जाता है। दरगाह में लंगर की व्यवस्था भी है और लोग बाबा की कहानियां भी सुनते हैं। यहां हर मज़हब के लोग दर्शन के लिए आते हैं। लोगों का मानना है कि इनके दरबार में हाज़री देने वाले लोगों को त्वचा की हर बीमारी से निज़ात मिल जाती है। लोग बाबा को नमक, सरसों का तेल और झाड़ू भेंट करते हैं। यह लोगों का बाबा के प्रति प्यार और यकीन है। हर साल अक्तूबर के महीने में यहां मेला लगता है। इस मेले में दूर–दूर से लोग शिरकत करने आते हैं। यह दरगाह सभी धर्मों की एकता और भाईचारे की जीती जागती मिसाल है।

4.2 ग्रामीण सभ्याचारक मेले व निजी महफिलें :

संगीत कला सभी ललित कलाओं में से ऐसी कला है कि हर इन्सान चाहे वो संगीत की समझ रखे या न रखे परन्तु वह संगीत को सुनना बहुत पसन्द करता है। इन बातों की पुष्टि हमारे समाज में प्रचलित ग्रामीण मेलों व संगीतक महफिलों से स्पष्ट होती है।

4.2.1 ग्रामीणी सभ्याचारक मेले : हर क्षेत्र की सभ्यता एवं संस्कृति वहाँ पर होने वाले त्यौहारों एवं मेलों में देखी जा सकती है जिसमें उस क्षेत्र के लोगों की जीवन शैली, रहन–सहन, खान–पान और उस क्षेत्र की विभिन्न कलाओं की साफ झलक देखने को मिलती है। पंजाब की सभ्यता एवं संस्कृति मेलों और त्यौहारों के कारण विश्व–प्रसिद्ध है। पंजाब के ग्रामीण एवं सांस्कृतिक सभ्याचारक मेलों में जहाँ पंजाब के खेल–कूद, खान–पान, लोगों की जीवन–शैली आदि देखने को मिलती है वहीं संगीत कला के विभिन्न रूप भी इन मेलों में देखने को मिलते हैं जिसमें सुगम संगीत की कलाओं का विशेष स्थान है। पंजाब की संगीत कला के अन्तर्गत एक और ऐसा वर्ग है जो ढाडी गायन परम्परा द्वारा इन मेलों की शोभा में चार चाँद लगाता है। ढाडी का अर्थ ढड–सारंगी बजा के किसी की प्रशंसा करने से है परंतु समय से चलती आ रही इस परंपरा के अंतर्गत ढाडी कलाकारों के 3 वर्ग लोक ढाडी, सिख ढाडी और सूफी ढाडी आते हैं। सूफी ढाडी सूफी कवियों द्वारा रचित रचनाओं को गाते हैं जिसमें शेख फरीद, सुल्तान बाहू, साहू सेन, बुल्ले शाह आदि प्रसिद्ध सूफी कवि हैं। सूफी कवियों ने लोक भाषा पंजाबी द्वारा अपने विचारों को जनता तक पहुंचाने का माध्यम बनाया इस विचारधारा ने पंजाबी काव्य को पवित्रता श्रेष्ठता अध्यात्मिकता जैसे गुण प्रदान किए हैं, इसलिए सूफी ढाडी ग्रामीण प्रस्तुतियों में गायन सम्बन्धित ऐसे ही विषय मौजूद होते हैं जिसमें पवित्रता रब्बी इश्क मन की शुद्धता को ही सामने रखा जाता है। पंजाब के मालवा क्षेत्र में सूफी ढाडियों का प्रचलन है। इनमें ढाडी ईदू शरीफ, ढाडी देसराज लचकाणी, ढाडी राजमान दयालगड़, ढाडी दीदार सिंह सीतल, ढाडी गुरमीत सिंह, ढाडी अरमान अली आदि सूफी संगीत को जनसमूह तक पहुंचाने का कार्य दिल से कर रहे हैं। ये ढाडी दरगाहों मज़ारों पर लगने वाले मेलों में शिरकत करते हैं और सूफियाना कलामों का गायन करते हैं। अतः स्पष्ट हो जाता है कि पंजाब की संगीत परम्परा में ग्रामीण

सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित मेलों का विशेष स्थान है जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान तक विभिन्न तरह की कलाएं प्रचलित हैं जो इन्हीं मेलों व उत्सवों की वजह से प्रवाहित हैं जिसमें सूफी ढाडी गायक कलाकारों ने भी सूफियाना गायन को भी प्रचारित व प्रसारित कर वर्तमान में लोकप्रिय किया है।

4.2.2 : निजी महफिलें :

इसी की भांति निजी महफिलें विभिन्न संगीतक गायन विधाओं के प्रचार–प्रसार का महत्वपूर्ण माध्यम है, वहीं सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में भी विशेष भूमिका निभा रही है। जिसमें विशेष रूप में जनसाधारण/संगीत श्रोतागण अपने घरों में या किसी विशेष अवसर पर सूफियाना गायन की महफिलों का आयोजन करते हैं और अपने प्रिय सूफियाना गायक कलाकारों को आमंत्रित करके लम्बे समय तक संगीत कला का आनन्द लेते हैं। निजी महफिलों में जहां सूफी परम्परा से जुड़े हुए गुणीजन संगीतज्ञों को श्रवण करने का अवसर प्राप्त होता है वहीं नए पैदा हो रहे युवा कलाकारों को बहुत कुछ सीखने का मौका मिलता है और साथ में नए कलाकारों को प्रस्तुति करने का अवसर भी मिलता है जिसमें उनका मनोबल बढ़ता है। इसके अतिरिक्त सूफियाना गायन सम्बन्धी विभिन्न प्रकारों की जानकारी होती है कि कौन सी गायन विद्या की क्या विशेषताएं हैं जो कि बड़े–बड़े संगीत प्रस्तुतियों में समय के अभाव के कारण संभव नहीं हो पाता। लेकिन निजी महफिलों में समय का बंधन न होने के कारण सूफियाना गायन की बारीकियों का ज्ञात होता है। वर्तमान समय के असंख्य ऐसे गायक कलाकार हैं जो निजी संगीत या सूफियाना महफिलों की देन हैं। तो स्पष्ट हो जाता है कि निजी महफिलों की लोकप्रियता फलस्वरूप भारतीय संगीत की विभिन्न विधाओं के प्रचार–प्रसार का महत्वपूर्ण अंग है।

4.3 शिक्षण संस्थाएं :

समाज के उद्भव एवं विकास के साथ–साथ विभिन्न कालन्तरों में शिक्षण के भिन्न–भिन्न माध्यमों द्वारा संगीत कला प्रचारित होती रही है। जहाँ एक तरफ आरम्भिक काल में गुरूकुल, मन्दिर, मस्ज़िद आदि शिक्षा का मुख्य स्त्रोत थे। कालान्तर से शिक्षण केन्द्र परिवर्तित होकर भिन्न–भिन्न शिक्षण संस्थाओं के रूप में समाज का अभिन्न अंग है। वर्तमान में शिक्षण संस्थाओं से भाव उन शिक्षक अदारों

से है जिसका सम्बन्ध औपचारिक शिक्षा से है जो डिग्री, सर्टिफिकेट्स प्रदान करते हैं जिसके अन्तर्गत स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय को लिया गया है, सर्वप्रथम स्कूल में बेशक संगीत को बच्चों की रूचि या शौक के रूप में कुछ गतिविधियाँ करवाई जाती हैं परन्तु बच्चों में संगीत के प्रति लगन यहाँ से उभरती है। स्कूलों में से ही होनहार बच्चे आरम्भिक शिक्षा लेकर संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ते हैं। सूफी संगीत के क्षेत्र में चाहे सीधे रूप से स्कूलों का योगदान बहुत कम रहता है परन्तु फिर भी संगीत से बच्चों को जोड़ने का कार्य यह बाखूबी निभा रहे हैं। इसके पश्चात उच्च शिक्षा में कॉलेज और विश्वविद्यालय के बारे में साथ साथ में बात की गई है। क्योंकि कॉलेजों का सम्बन्ध विश्वविद्यालय से ही रहता है। पंजाब के प्रमुख विश्वविद्यालय जो उच्च शिक्षा को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में विशेष सराहनीय कार्य कर रहे हैं, जिसके अन्तर्गत : पंजाब विश्वविद्यालय (चण्डीगढ़), पंजाबी विश्वविद्यालय (पटियाला), गुरू नानक देव विश्वविद्यालय (अमृतसर) विशेष हैं

शिक्षण के उच्च केन्द्र विश्वविद्यालय जहाँ समाज से जुड़े हुए प्रत्येक विषय को शिक्षा के रूप में विद्यार्थियों को पढ़ा रहे हैं। इसी की भांति पंजाब की संगीत परम्परा से अवगत करवाने के लिए संगीत विभागों के द्वारा कॉलेज और विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को सूफी परम्परा एवं सूफियाना गायन से अवगत करवा रहे हैं। शोधकार्य के अतर्निहित एम.फिल., पीएच.डी. तक की उपाधि हेतु सूफियाना गायन परम्परा के अधीन आने वाले गायन, वादन, साहित्य आदि विषयों पर शोधकार्य भी किए जा चुके हैं और करवाए जा रहे हैं जो कि सूफी परम्परा की विरासत के लिए अच्छा कदम है। उदाहरण के लिए कुछ शोधकार्य की सूची इस प्रकार है :

- पंजाब की सूफी परम्परा – पंजाब विश्वविद्यालय
- अमीर खुसरो की संगीत को देन – पंजाब विश्वविद्यालय
- सूफी गायन परम्परा का साहित्यिक एवं संगीतक अध्ययन – पंजाब विश्वविद्यालय
- सूफी परम्परा की काफी गायन शैली – पंजाब विश्वविद्यालय

- वडाली बन्धुओं का सूफी संगीत में योगदान – गुरू नानक देव विश्वविद्यालय
- सूफी अते हिन्दोस्तानी संगीत : समकाली परिपेक्ष्य – गुरू नानक देव विश्वविद्यालय
- भारतीय चित्रपट में सूफी संगीत का योगदान – गुरू नानक देव विश्वविद्यालय
- कव्वाली गायन शैली दा बदलदा स्वरूप – पंजाबी विश्वविद्यालय
- सूफी कावि अते सूफी संगीत दे अंतर सम्बन्ध दा सिरजणात्मक पासार – पंजाबी विश्वविद्यालय
- उस्ताद नुसरत फतेह अली खां दी संगीतक प्रतिभा दे वख्ख वख्ख पहलू – पंजाबी विश्वविद्यालय
- उस्ताद मुहम्मद शरीफ दा कव्वाली विच योगदान – पंजाबी विश्वविद्यालय, आदि

इसके अतिरिक्त सूफी परम्परा सम्बन्धित रचित प्रसिद्ध सूफी फकीरों की अरबी, फारसी रचनाओं को वर्तमान प्रचलित भाषाओं में अनुवादित कर पुस्तकों, शोधपत्रों, सूफी कलाकारों विल्प सम्बन्धी आदि लिखित सामग्री के रूप में श्रोतगणों और जनसाधारण के लिए उपलब्ध भी करवा रही है। उदाहरणार्थ :

- कश्फुल महजूब, हज़रत शेख मखदूम अली दुजवीरी, (अनुवादिक, काला सिंह बेदी)
- इस्लाम अते सूफीवाद (प्रो. गुलवंत सिंह)
- सूफी कावि अंक
- सामाजिक विज्ञान पत्र (सूफी परम्परा पर आधारित) आदि

पंजाबी विश्वविद्यालय द्वारा किये गए प्रयास संगीत श्रोताओं को दिशा प्रदान कर रहे हैं।

साहित्य और संगीत कला एक दूसरे के पूरक हैं जिसके फलस्वरूप शिक्षण स्थान विद्यार्थियों को सूफियाना गायन की सूक्ष्म बारीकियों से अवगत करवाने के

लिए प्रयोगात्मक रूप में सूफियाना परम्परा आधारित सेमीनार, सूफियाना प्रस्तुतियों का आयोजन कर संगीत गोष्टियां करवाती हैं ताकि सूफी परम्परा सम्बन्धित मुश्किलों को सुलझाया जा सके। इसके अतिरिक्त सूफियाना गायन से जुड़े हुए प्रसिद्ध कलाकारों को आमन्त्रित कर विद्यार्थियों और संगीत गुणीजनों से वारतालाप भी करवाए जाते हैं जिसमें पद्मश्री श्री वडाली बन्धु, पदम् श्री हंस राज हंस, शौकत अली मतोई आदि नाम शामिल हैं। परिणामस्वरूप वर्तमान के असंख्य ऐसे प्रसिद्ध युवा कलाकार हैं जो शिक्षण संस्थाओं के मंच प्रदर्शनों से निकल कर सूफियाना गायन परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं जिनमें कव्वाल सरदार अली लखविन्दर वडाली, लोक गायक जसबीर जस्सी, खान साहब, कनवर गरेवाल, डॉ. ममता जोशी, डॉ. सतिंदर सरताज, आदि विशेष हैं। अतः कहना न्याय संगत होगा कि शिक्षा के आरम्भिक केन्द्रों से लेकर विश्वविद्यालयों तक संगीत कला का विशेष स्थान रहता है जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान में समाज की हर श्रेणी पंजाब की विभिन्न संगीतक शैलियों से अवगत होने के साथ–साथ वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय स्थान पर अपनी विलक्ष्ण पहचान बना चुकी सूफियाना गायन से भलीभांति परिचित हैं जिसमें शिक्षण स्थानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

4.4 गैर शिक्षण संस्थाएं :

सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में जहां शिक्षण संस्थाएं अपनी भूमिका निभा रही है वहीं गैर शिक्षण संस्थाएं भी इसमें बढ़–चढ़कर अपनी भूमिका निभा रहे हैं गैर शिक्षण संस्थाओं से भाव उन संस्थाओं से है जिनमें शिक्षा के अतिरिक्त अन्य साधकों के द्वारा शिक्षण प्रक्रिया होती है। गैर शिक्षण संस्थाओं में हम मीडिया रियलिटी शो से जुड़े हुए कार्यक्रम जिनमें कोक स्टूडियो, वॉइस ऑफ इंडिया, वॉयस ऑफ पंजाब, आवाज़ पंजाब दी, राइजिंग स्टार, लिटिल चैंप्स आदि मुख्य हैं। फलस्वरूप पंजाब की संगीत परम्परा को आने वाले युवा कलाकार सुरक्षित रख कर उन्हें आगे बढ़ा रहे हैं जिसका वर्णन इस प्रकार है :

4.4.1 मीडीया द्वारा सूफी संगीत का प्रचार :

आधुनिक समय में हर वस्तु जो मीडिया से जुड़ी है वह दुनिया के हर कोने में कुछ पलों में पहुंच जाती है। आज जनसाधारण विभिन्न सभ्याचारों और कलाओं का आनंद घर बैठे ही ले सकता है। यह सब मीडिया के यंत्रों से ही संभव हुआ है

मीडिया का भाव मध्यम ज़रिया या साधन है। इसी की भांति यह कहा जा सकता है कि जब कोई खबर या जानकारी जिस साधन के द्वारा जनसमूह तक पहुंचती है उसे मीडिया शब्द से संबोधित किया जाता है। मीडिया संचालक और प्राप्तकर्ता के बीच सम्बन्ध जोड़ने का कार्य करता है। मीडिया के अधीन इसको दो भागों में विभाजित किया गया है।

1. **प्रिंट मीडिया :** जिसके अंतर्गत लिखित माध्यम को लेते हैं जिसमें पुस्तकें अखबारें, किताबें, पत्रिकाएं आदि को शामिल किया गया है।
2. **इलैक्ट्रॉनिक मीडिया :** इसके अंतर्गत जिन माध्यमों को लेते हैं उनके आगे दो विभागों में विभाजित किया गया है :

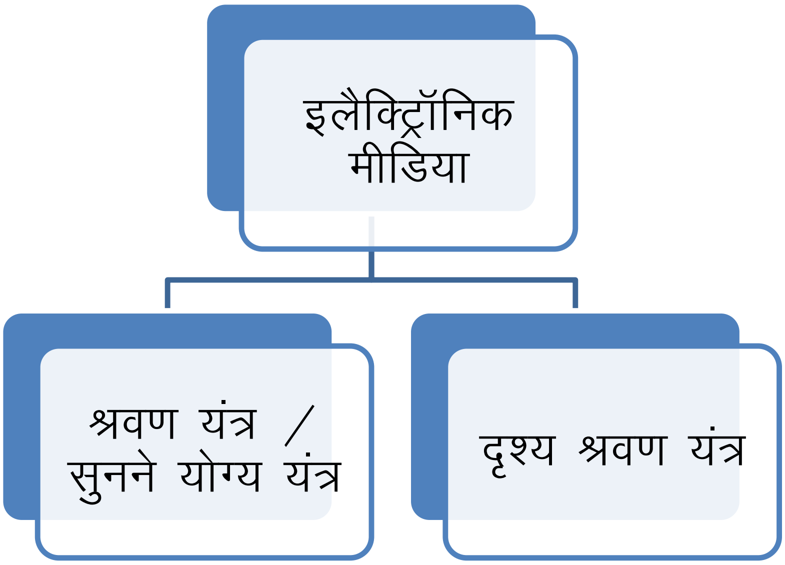

श्रवण यंत्र / सुनने योगय यंत्र : ऐसे माध्यम में उन सब माध्यमों को लेते हैं जो सुनने के लिए उपयोग होते हैं इसमें ग्रामोफोन, रेडियो, टेप रिकॉर्डर कैसेट आदि शामिल हैं।

दृश्य श्रवण यंत्र : ऐसे माध्यमों के अन्तर्गत देखने और सुनने दोनों का कार्य शामिल होता है, इसमें टेलीविज़न, इंटरनेट, सी.डी. आदि आते हैं।

मीडिया में यह दोनों माध्यम सूफी संगीत के प्रचार प्रसार का मुख्य माध्यम है। सूफियाना गायन आरम्भ में मज़ारों या दरगाहों पर गाने तक ही सीमित था। परन्तु मीडिया के द्वारा जनसाधारण तक पहुँचने में सफल हो पाया, जिसके अन्तर्गत वर्तमान में घर बैठे ही सूफी संगीत की विभिन्न विधायों या शैलियों का आनन्द ले सकते हैं। वह बात अलग है कि मीडिया ने इन विधाओं को लोगों तक पहुँचाने के

लिए इनके वास्तविक स्वरूप में अपनी सुविधा अनुसार परिवर्तन भी किया है। परिणामस्वरूप सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में मीडिया ने महत्वूपर्ण योगदान दिया है।

4.4.2 प्रिंट मीडिया के अन्तर्गत सूफी संगीत का प्रचार :

इतिहास में सबसे पहले प्रिंट मीडिया प्रचार में आया जिसमें मिलने वाले पुरातन हस्तलिखित ग्रंथ, शिलालेख आदि इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है हमारे गुरूओं, पीरों देवी–देवताओं द्वारा रचित वाणी लिखित माध्यम द्वारा ही वर्तमान तक पहुंची है और आने वाली पीढ़ियों तक भी पहुंचेगी। सूफी कवि शेख फरीद, शाह हुसैन, सुल्तान बाहु, बुल्ले शाह और अन्य सूफी साहित्यकारों की रचनाएं लिखित रूप में ही प्राप्त होती हैं जिसके आधार पर सूफी साहित्य और सूफी संगीत से संबंधित सैंकड़ों पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है और हो भी रहा है।

अखबारें : अखबार का जन–जीवन में विशेष महत्व है। दिन की शुरूआत होते ही विश्वभर की जानकारी अखबार के द्वारा प्राप्त होती है। जहां अन्य विषयों सम्बन्धी अखबारों से जानकारी प्राप्त होती है। वहीं विभिन्न कलाओं के सम्बन्धी सदैव पढ़ने को मिलता है जिसके अन्तर्गत सूफी साहित्यकारों की रचनाएं, सूफी संगीत, सूफी फकीरों के जीवन परिचय, सूफी संगीत सूफी कार्यक्रमों संबंधी जानकारी व विचार चर्चा समय समय पर अखबारों द्वारा प्राप्त होती है। तो कहना न्याय संगत होगा कि अखबार प्रिंट मीडिया का महत्वपूर्ण अंग है जो सरल और सस्ता प्रिंट मीडिया का स्त्रोत है।

पत्रिकाएं : हस्तलिखित ग्रंथ, समाचार पत्र और पुस्तकों के अतिरिक्त मासिक पत्रिकाएं भी वर्तमान में प्रिंट मीडिया के प्रचार–प्रसार का विशेष अंग हैं, जिसमें विभिन्न विषयों की पत्रिकाएं शामिल हैं और किसी विशेष विषय के अन्तर्गत या संगीत कला आधारित पत्रिकाएं भी हैं जो संगीत कला से जुड़े हुए श्रोताओं एवं पाठकों की जिज्ञासा को शांत करने हेतु संगीत की विभिन्न शैलियों सम्बन्धी जानकारी को जनसमूह तक प्रकाशित कर पहुँचाती है, जैसे वर्तमान में संगीत की मासिक पत्रिकाओं में विशेष हैं :

- संगीत मासिक पत्रिका, हाथरस (उत्तर प्रदेश)

- संगीत कला विहार, मासिक पत्रिका
- सूफियाना संगीत आधारित अंक जिसमें
    - संगीत कव्वाली अंक
    - ख्याल अंक
    - गज़ल अंक
    - ठुमरी अंक आदि
- अमृत कीर्तन मासिक पत्रिका

इसके अतिरिक्त समाजिक विज्ञान पत्रिका में भी समय समय पर सूफी संगीत से संबंधित लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

4.4.3 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा सूफी संगीत का प्रचार प्रसार

टेप रिकॉर्डर और कैसेट्स या सी.डी. : संगीत की दुनिया के लिए वरदान की भांति यह यन्त्र सिद्ध हुआ, जिसके माध्यम से संगीत की हर विधा का प्रचार–प्रसार हुआ और सूफियाना गयान में इस यन्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। जिसकी सहायता से सूफियाना गायन की पारम्परिक बंदिशों का भंडार रिकार्ड हो सका और सुरक्षित भी है।

''इसकी खोज 19वीं शताब्दी के आखिर में हुई और सन 1898 में पहली टेप रिकॉर्डर बनी।''[1] इसका छोटा आकार होने के कारण यह कहीं भी लेकर जाया जा सकते वाला यंत्र संगीत प्रेमियों के लिए बहत ही लाभदायक सिद्ध हुआ। इसके द्वारा सूफी संगीत के प्रेमी संगीतकारों की आवाज़ को रिकॉर्ड करके बार बार श्रवण कर सकते हैं। वर्तमान समय में अलग अलग रिकॉर्ड यन्त्रों में रिकॉर्डिंग की सुविधा उपलब्ध है जिसमें मुख्य रूप से मोबाईल फोन, आईपोड, एम.पी.फोर, ऑडियो–वीडियो कैमरा आदि आते हैं। ऐसे इलैक्ट्रॉनिक यन्त्रों की बदौलत ही हमारे महान संगीतकारों की आवाज़ को सुरक्षित रखा जा रहा है। इसी की भांति सूफियाना आधारित गायन या शैलियों के लिए रिकॉर्डिंग यन्त्रों ने विशेष भूमिका निभाई। उस्ताद नुसरत फतेह अली खान साहिब, आबिदा प्रवीण, अख्तर कुरैशी,

1. Dave, Jack, The Audio-Viusal, p. 169.

अमज़द गुलाम फरीद साबरी, सलामत–नज़ाकत अली, अली अज़मत, बरकत सिद्धू, वडाली बंधु, पूरण शाह कोटी, करामत फकीर, रहमत कवाल, मोहम्मद शरीफ कवाल, आदि संगीतकार हैं जिन्होंने महान सूफी साहित्यकारों की रचनाओं को गायन किया और टेप रिकॉर्डर के रूप में संगीत प्रेमियों को अपनी कला का आनंद लेने का मौका दिया। नुसरत फतेह अली खान द्वारा सैंकड़ों कव्वालियां का भंडार उपलब्ध है जो इन यन्त्रों की वजह से वर्तमान में प्रसिद्धि हासिल किए हुए है, आज भी हर उम्र के लोग इनको सुनना पसंद करते हैं। उदाहरणार्थ : इनकी कव्वालियों में 'सांसों की माला पर सिमरू मैं पी का नाम', 'छाप तिलक सब छीनी', 'दमा दम मस्त कलंदर', 'मैनूं यार दी नमाज़ पढ़ लैन दे', 'मैं जाना जोगी दे नाल', 'अल्लाह हू' आदि लोकप्रिय हैं। वर्तमान में टेप या कैसेट के स्थान पर सी.डी., पेन–ड्राईव, आदि का रूझान है। इसके अतिरिक्त मोबाईल फोन, मेमोरी कार्ड में भी गायन के विभिन्न प्रकारों को स्टोर करके रखा जाता है ताकि जब मन करे संगीत–प्रेमी इन रचनाओं को श्रवण कर सकें। रिकार्डिंग स्त्रोतों के फलस्वरूप ही सूफी संगीत देशों–विदेशों तक फैला है और जिन कलाकारों के कलामों को सुनना संभव नहीं था, इन इलेक्ट्रॉनिक यन्त्रों के अन्तर्गत संगीत गुणीजनों को श्रवण किया जा रहा है। परिणामस्वरूप हिन्दोस्तान ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सूफियाना गायन लोकप्रिय हुआ है जिसमें इलैक्ट्रॉनिक रिकार्ड यंत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है।

रेडियो : रेडियो को आकाशवाणी के नाम से भी जाना जाता है। आकाशवाणी प्रचार प्रसार का श्रवण योग्य माध्यम है जिसके द्वारा मीलों दूर प्रसारित हो रहे कार्यक्रम को श्रोतागण घर बैठकर एक छोटे से रेडियो सेट द्वारा भारती प्रसारण सेवा की मदद से सारे परिवार में बैठकर सुन सकते हैं। आकाशवाणी भारती प्रसारण सेवा का भारतीय नाम है। इसके अतिरिक्त इसको ऑल इंडिया रेडियो और प्रसार भारती के नाम से भी जाना जाता है। ''भारत में रेडियो का आरंभ अगस्त 1921 ई. में हुआ 23 जुलाई 1927 ई. में इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी की स्थापना हुई।''[1] 9 जनवरी 1936 ई. को पहला प्रसारण केंद्र दिल्ली में खोला गया फिर देश के अलग अलग शहरों में केंद्र–खुले। ''जून 1936 में इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग का नाम बदलकर ऑल इंडिया रेडियो रखा गया। भारत पाक विभाजन

1. दिक्षित, सूर्य प्रसाद, जन पत्रकारता, जन संचार एवं जन संपर्क, पृ. 89

के समय भारत में छह प्रसारण केंद्र और 18 ट्रांसमीटर थे वर्तमान समय में आकाशवाणी के कुल 229 रेडियो स्टेशन और कुल 370 ट्रांसमीटर हैं।''[1] अलग–अलग जानकारी अनुसार संगीत द्वारा मनोरंजन प्रोग्रामों को आकाशवाणी द्वारा ही प्रकाशित किया जाता है। आकाशवाणी के विभिन्न प्रोग्रामों की भांति सूफियाना कलामों को भी प्रसारित किया जाता है। विविध भारती द्वारा नज़्म–ए–कवाली प्रसारित किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुतियों में अक्सर नुसरत फतेह अली खां, बरकत सिद्धू, वडाली बंधू, आदि कलाकारों की सूफी संगीतक शैलियां श्रवण करने को मिलती है।

दूरदर्शन : आकाशवाणी की तरह दूरदर्शन भी प्रचार प्रसार और मनोरंजन का माध्यम है। इसकी विशेषता यह है कि जनसमूह श्रवण के साथ–साथ देखने का भी अवसर प्राप्त करते हैं। ''भारत में नियमित रूप से दूरदर्शन का प्रसारण का 15 दिसंबर 1959 में हुआ जिसका उद्घाटन भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने आकाशवाणी के छोटे से प्रायोगिक रूप में किया।''[2] ''अप्रैल 1976 में आकाशवाणी और दूरदश्रन को अलग अलग कर दिया। भारतीय टेलीविजन को दूरदर्शन का नाम दिया गया और इसके लिए सत्यम शिवम सुंदरम का सिद्धांत लागू किया गया।''[3] वर्तमान समय में यह अपने रंगीत रूप में उपलब्ध है इस पर अलग–अलग भारतीय और विदेशी चैनलों का प्रसारण किया जाता है जिसमें समय–समय पर भिन्न–भिन्न चैनलों द्वारा सूफियाना प्रस्तुतियों का प्रसारण किया जाता है जहाँ ऐसे प्रसारणों के अन्तर्गत शुरूआती दौर में सीमित चैनलों के द्वारा विभिन्न कलाओं अथवा सामाजिक विषयों सम्बन्धी प्रोग्राम देखने व सुनने को मिलते थे। वहीं वर्तमान में टेक्नोलॉजी की प्रसिद्धि हेतु श्रवण एवं दृश्यों चैनलों की भरमार है। फलस्वरूप विशेष शैली आधारित टी.वी. चैनल्स द्वारा प्रसारण होने लगा है जिसके अन्तर्गत टी. वी. फिदा पर सूफी संगीत के प्रोग्राम अधिक्तर देखने व सुनने को मिलते हैं। टी.वी. 9 चैनल पर 'जहान–ए–सूफी' नाम का प्रोग्राम खासतौर पर सूफी संगीत से संबंधित है। इसके अतिरिक्त पी.टी.सी. पंजाबी चैनल के अन्तर्गत 'सुरों दे वारिस' प्रोग्राम में सूफी रंग देखने को मिलता है और पंजाब के सूफियाना कला से जुड़े हुए कवाल,

1. वड़ैच ,अमरजीत सिंह,, ए आकाशवाणी ए, पृ. 16
2. रत्तू, कृष्ण कुमार, दृश्य, श्रव्य एवं जनसंचार माध्यम, पृ. 49
3. रानी, श्रीवास्तव, संगीत अंक, अगस्त 2008, पृ. 39

काफी कलाकार जिनमें कवाल शौकत अली मतोई, वडाली बंधू, पूरण शाह कोटी, हंस राज हंस आदि गायकों की संगीतक प्रस्तुतियां भी श्रवण करने को मिलती हैं। एन.डी.टी.वी. इमेजिन चैनल पर 'जनून कुछ कर दिखाने का', सोनी चैनल के 'वॉइस ऑफ इंडिया', एम.एच.वन के 'आवाज पंजाब दी', 'वॉयस ऑफ पंजाब' आदि रियालिटी शो में भी सूफियाना ज़ोनल के अधीन प्रोग्राम देखने को मिलते हैं जिसमें युवा कलाकार सूफी संगीत की शैलियों को प्रस्तुत करते हैं। इसी की भांति दूरदर्शन जालंधर भी अलग–अलग सूफी महफिलों जैसे 'सुर–सांझ' आदि की प्रस्तुतियां श्रोताओं की जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास करता है। इसके अतिरिक्त सूफी संगीतकारों के जीवन, उनको मिले सम्मान और संगीत गुणीजनों को सूफियाना गायन की लोकप्रियता के परिणामस्वरूप ही वर्तमान में 'कोक स्टूडियो' चैनल सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। फलस्वरूप जहां संगीत की विभिन्न शैलियों की लाईव प्रस्तुति को प्रसरित किया जाता है। वहीं सूफी परम्परा के अधीन सूफियाना गायन विश्व ख्याति अरजित कर रहा है। अतः कहना न्याय–संगत होगा कि ऐसे दृश्य व श्रव चैनलों का ही योगदान है कि वर्तमान में जनसाधारण का हर वर्ग संगीत की सभी शैलियों की जानकारी रखता है जिसका श्रेय इन दृश्य एवं श्रवण माध्यमों को जाता है।

कोक स्टूडियो एक ऐसा टी.वी. प्रोग्राम है, जो भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में प्रसारित होता है। भारत में कोक स्टूडियो एम.टी.वी. और पाकिस्तान में कोक स्टूडियो पाकिस्तान के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रोग्राम में लाईव संगीत के रूप, गायन विधाओं आदि को रिकार्ड किया जाता है जिसमें प्रसिद्ध संगीत कलाकारों द्वारा शिरकत की जाती है। जहाँ कोक स्टूडियो के माध्यम से विभिन्न संगीत शैलियों को फ्यूज़न संगीत द्वारा नए अंदाज़ में प्रस्तुत कर प्रचारित किया जा रहा है वहीं सूफियाना गायन को भी लोकप्रिय बनाने में अपनी भूमिका अदा कर रहा है। इस प्रोग्राम की शुरूआत 2011 में हुई जो एम.टी.वी. इंडिया चैनल और डी.डी. नेश्नल पर दिखा जाता रहा। भिन्न–भिन्न ऐपिसोड के अन्तर्गत प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा सूफी रचनाओं को गायन किया गया जिसमें पंजाब क्षेत्र के गायक कलाकारों या सूफियाना गायन से जुड़े हुए कलाकारों के अतिरिक्त राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय जगत की प्रसिद्ध संगीतक हस्तियों द्वारा सूफियाना रचनाओं का गायन किया जाता है।

वर्तमान में कोक स्टूडियो की प्रसिद्धि सूफियाना गायन से ही हासिल हुई है जिससे ऐसी ईबादत रूपी गायन शैली की लोकप्रियता स्पष्ट हो जाती है।

4.4.4 शोशल मीडिया :

समाजिक सोशल साइटस सोशल नेटवर्किंग द्वारा सूफी संगीत का प्रचार प्रसार सोशल नेटवर्क सेवाएं उन लोगों की ऑनलाइन कम्युनिटी है यहां लोगों को अपनी इच्छा पसंद एक गतिविधियों को शेयर करने और दूसरों की इच्छा व पसंद के बारे में जानकारी हासिल करने में लाभकारी है ज्यादातर सोशल नेटवर्क सेवाएं इंटरनेट से जुड़ी होती हैं ई मेल के इस्टैंट मैसेज के द्वारा यूजर्स को आपस में वार्तालाप करने की सुविधा प्रदान करती है सोशल सेवाओं में फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि के नाम वर्णनीय है यह हर वर्ग के लोगों को आपस में जोड़ने एवं उन्हें कन्वर्ट करने का कार्य करती है यह किसी के विचारों का आदान–प्रदान पिक्चर शेयर करने में भी मददगार है

इन सेवाओं का मुख्य लाभ यह है कि यह सेवाएं संसार के किसी भी कोने मे से चलाई जा सकती हैं इन सेवाओं का संगीत के क्षेत्र में विशेष योगदान है वहीं सूफी संगीत के प्रचार प्रसार में भी अपनी भूमिका निभा रही है इन सभी सोशल साइट की मदद से सूफी संगीत के बारे में कभी भी जानकारी हासिल कर सकते हैं इस क्षेत्र से जुड़े सूफी गायकों कवियों आदि की रचनाओं को सुन सकते हैं और लोगों तक पहुंचा सकते हैं।

4.4.5 चित्रपट :

वर्तमान में चित्रपट मनोरंजन का सबसे बड़ा माध्यम है जिसने हर क्षेत्र की सभ्यता एवं संस्कृति और विभिन्न कलाओं का प्रचार–प्रसार कर जनसमूह को अवगत करवाया है। इसी की भांति सूफियाना गायन शैली कव्वाली के अंदाज़ को इश्क–ए–मिज़ाजी रूप में चित्रपट ने आरम्भिक दौर से ही प्रस्तुत किया, जिसके अन्तर्गत 1945 में चित्रपट जीवन में सर्वप्रथम 'आहें न भरी शिकवे न किए, कुछ भी न ज़ुबां से काम लिया' का प्रयोग किया गया। इसी तरह 'हमें तो लूट लिया मिल के हुसन वालों ने, काले–काले बालों ने, गोरे–गोरे गालों ने', 'ये इश्क–इश्क है इश्क–इश्क', 'ऐ मेरी ज़ोहराज़बी', 'दो घुट पिला दे साकिया', 'देर न हो जाए कहीं देर न हो जाए', आदि इश्क मिज़ाजी कवालियों का प्रचलन चित्रपट में होने लगा।

पश्चात् धीरे–धीरे चित्रपट में इश्क–हकीकी आधारित कवालियों के द्वारा जिसमें 'आका सलीम चिश्ती मौला सलीम चिश्ती', 'मैं हो गई दीवानी', 'इस शाने करम का क्या कहना', 'अल्लाह–अल्लाह', 'ये दिल आशिकाना' शामिल किए गए। इसके अतिरिक्त वर्तमान की प्रसिद्ध चित्रपट सूफियाना गायन रचनाओं में 'ख्वाजा मेरे ख्वाजा', 'कुन फाया कुन' आदि सूफियाना गायन प्रस्तुतियों को चित्रपट संगीत में प्रयोग किया गया जिसमें सूफियाना गायन से हर श्रेणी परिचित होने लगी। अतः स्पष्ट हो जाता है कि सूफियाना गायन के प्रचार–प्रसार में चित्रपट का महत्वपूर्ण योगदान है।

4.4.6 कंप्यूटर व इंटरनेट द्वारा सूफी संगीत का प्रचार :

कंप्यूटर तेजी से प्रचलित होने वाला प्रचार प्रसार का माध्यम है। ''कंप्यूटर के विकास की शुरुआत 1940 के दशक में हुई और 1946 में ENIAC कंप्यूटर की खोज से आधुनिक कंप्यूटर का आरंभ हुआ जिसके माध्यम से हम सूचनाओं और आंकड़ों को इकट्ठा करके सुरक्षित रख सकते हैं।''[1] कंप्यूटर की खोज के बाद इंटरनेट के आने से सूचनाओं को दुनिया के किसी भी कोने में भेजना संभव हुआ सूफी संगीत के क्षेत्र में इंटरनेट का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है अलग–अलग संगीतकारों की ऑडियो वीडियो रिकॉर्डिंग डॉक्यूमेंट्री फिल्में सूफी संगीत सूफी साहित्य और सूफी संगीत कारों के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं कलाकारों से ईमेल द्वारा संपर्क बना सको। उसके लिए इंटरनेट पर अलग–अलग वेबसाइट उपलब्ध हैं जिसमें सूफी संगीत संबंधी जानकारी हासिल की जा सकती है जिसकी अंर्तगत सुफियाना गायन अधीन जहां से सूफी कव्वाली सूफी संगीतकारों की सामग्री को प्रेमी, संगीत या इस क्षेत्र से जुड़े हुए लोग डाउनलोड करके बार–बार देख सुन सकते हैं।

उपरोक्त की गई वार्तालाप से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी कला के प्रचार के लिए विभिन्न माध्यमों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। बिना माध्यम के किसी भी कार्य/कला के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी की भांति सूफी परम्परा के अन्तर्गत सूफियाना गायन के प्रचार प्रसार में जहाँ आरम्भ में सूफी स्थल/दरगाहों ने अहम भूमिका निभाई है, इसी तरह कालांतर से आए नए प्रचार

---

1. सत्यनारायण, एन.आर., पुस्कालय कम्प्यूट्रीकरण, पृ. 3

प्रसार के तकनीकी स्त्रोतों ने जहाँ विभिन्न संगीतक विधाओं के प्रचार में अपनी भूमिका निभाई वहीं सूफी परम्परा के प्रचार प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। अतः विभिन्न तरह के माध्यमों के फलस्वरूप ही वर्तमान में सूफियाना गायन के प्रचारित एवं प्रसारित होने के साथ साथ जनसाधारण में लोकप्रियता हासिल हुई है।

———